Comment on the appropriateness of the

हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न पत्र–प्राचीन काव्य

Time Allowed : Three Hours **Maximum marks : 100**

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित पद्यावरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये:

(क) काहे री नलनी तूँ कुन्हिलाँनी
तेरे ही नालि सरोवर पाँनी।।
जल मैं उतपति जल में बास, जल में नलनी तोर निवास।।
ना तलि तपति न ऊपरि आगि, तोर हेतु कहुकासनि लागि।
कहें कबीर जे उदिक समान, ते नहि मूए हँमरें जान।। 10

अथवा

हरि नांव हीरा हरि नांव हीरा।
हरि नांव लेट मिटै सब पीरा।।
हरि नांव जाती हरि नांव पांती।।
हरि नांव सकल जीवन मैं क्रांति।।
हरि नाव सकल सुषम की रासी।।
हरि नांव काटे जम की पासी।।
हरि नांव सकल भुवन ततसारा।।
हरि नांव नामदेव उतरै पारा 10

(ख) कातिक सरद चंद उजियारी। जगत सीतल, हौं बिरहै जारी।।
चौदह करा चाँद परगासा। जनहुँ जरै सब धरति अकासा।।
तन मन सेज करै अगिदाहू। सब कहँ चंद, भएउ मोहि राहू।।
चहूँ खण्ड लागै अँधियारा। जौं घर नाही कंत पियारा।।
अबहूँ निठुर! आउ एहि बारा। परब देवारी होइ संसारा।।
राखि झूमक गावै अंग मोरी। हौं झुरावं, बिछुरी मोरि जोरी।।
जेहि घर पिउ सो मनोरथ पूजा। मो कहँ बिरह, सवति दुख दूजा।।
सखि मानैं तिउहार सब, गाह देवारी खेलि।
हौं का गावौं कंत बिनु रही छार सिर मेलि।।

अथवा

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि। कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि।।
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही। मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्ही।।
अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा। सिय सुख ससि भए नयन चकोरा।।
भए बिलोचन चारुअचंचल। मनहुँ सकुचि निमि तज दिगंचल।।
देखि सीय सोभा सुखु पावा। हृदयँ सरहित बचनु न आवा।
जनु बिरंचि सब निज निपुनाई। बिरचि बिस्व कहँ प्रगटि दे खाई।।
सुंदरता कहुँ सुंदर करई। छविगृहँ दीपसिखा जनु बरई।।

http://questionpaperesult.com/

Scanned by CamScanner

सब उपमा कबि रहे जुठारी। केहिं पटतरौं बिदेह कुमारी।।
सिय सोभा हियँ बरनि प्रभु आपनि दसा बिचारि।
बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि।।

(ग) ऊधो मोहि ब्रज बिसरत नाहीं।
बृंदावन गोकुल बन उपवन, सघन कुंज की छाहीं।
प्रात समय माता जसुमति अरु नंद देखि सुख पावत।
माखन रोटी दह्यौ सजायौ, अति हित साथ खवावत।।
गोपी ग्वाल बाल सँग खेलत, सब दिन हँसत सिरात।
'सूरदास' धनिधनि ब्रजबासो, जिनसौं हित जदुतात।।

अथवा

मन रे परस-हरि के चरण।
सुभग शीतल कमल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरण।
जे चरण प्रहलाद परसे, इन्द्र पदवी धरण।।
जिन चरण ध्रुव अटल कीने, राखि अपनी शरण।
जिन शरण ब्रह्माण्ड भेट्यो, नख शिखौ श्री भरण।।
जिन चरण प्रभु परसि लीने, तरी गोतम घरण
जिन चरण कालीहि नाथ्यों, गोप लीला करण।।
जिन चरण धार्‌यों गोवर्धन, गरब मघवा हरण।
दासी मीराँ लालगिरधर, अगम तारण तरण।

2. "दादूदयाल के पदों के आधार पर दादू की प्रेमतत्त्व की व्यंजना और उनकी भाषा की" सोदाहरण विवेचना कीजिये। (शब्द सीमा 500 शब्द) 20

अथवा

"कबीर कवि की अपेक्षा समाज सुधारक अधिक थे।" इस कथन की समीक्षा कीजिये। (शब्द सीमा 500 शब्द) 20

3. "तुलसीदास का काव्य समन्वय की विराट् चेष्टा है।" इस कथन की समीक्षा कीजिये। (शब्द सीमा 500 शब्द) 20

"जायसी के काव्य में प्रकृति की बड़ी मनोरम झाँकी देखने को मिलती है।" इस कथन की उदाहरण देते हुए समीक्षा कीजिये। (शब्द सीमा 500 शब्द) 20

4. "सूरदास वात्सल्य और शृंगार रस के श्रेष्ठ कवि हैं।" इस कथन के परिप्रेक्ष्य में सूर के वात्सल्य और शृंगार रस का वर्णन कीजिये। (शब्द सीमा 500 शब्द) 20

अथवा

"प्रेम की तन्मयता, भाव विह्वलता और के प्रति गहरी आसक्ति रसखान की भक्ति की पहचान है।" सोदाहरण सिद्ध कीजिये। (शब्द सीमा 500 शब्द) 20

5. (क) काव्य दोष किस कहते हैं? किन्हीं दो काव्य दोषों को उदाहरण सहित समझाइये। 4

अथवा

रीति की परिभाषा बताते हुए, इसके प्रमुख भेदों का परिचय दीजिये। 4

(ख) निम्नलिखित में से किन्ही तीन अलंकारों को लक्षणों तथा उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिये :

http://questionpaperesult.com/

Scanned by CamScanner

(i) श्लेष (ii) भ्रान्तिमान (iii) यमक
(iv) व्यतिरेक (v) संदेह (vi) उत्प्रेक्षा।

अथवा

निम्नलिखित किन्हीं दो छन्दों के लक्षण उदाहरण सहित लिखिए:

(i) दोहा (ii) सोरठा (iii) चौपाई
(iv) हरिगीतिका (v) बसन्ततिलका।

http://questionpaperesult.com/

Scanned by CamScanner